Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **07.08.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

इंसान की प्रकृति में अल्लाह तआला ने यह अनुभूति रखी है कि वह किसी न किसी का होकर रहना चाहता है। उसके बिना इसके दिल को संतोष नहीं मिलता और किसी का होने का सबसे उत्तम उपाय यह है जिसके द्वारा दीन और दुनिया दोनों मिलते हैं कि इंसान अल्लाह तआला का हो जाए तथा इसके लिए प्रयास करे।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

जब हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा का वर्णन पढ़ते हैं अथवा सुनते हैं तो उनकी नेक प्रकृति, उनकी सच्चाई की पहचान के लिए तड़प, उनकी जान व माल की क़ुर्बानी करने के लिए तड़प और प्रयास तथा उनके हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से इश्क़ व मुहब्बत के अपने अपने अनुभव और विवेक के अनुसार स्तर तथा उसकी अभिव्यक्ति दिखाई देती है। अर्थात, ये वे आख़िरीन थे जो पहलों से मिलने के लिए अपने अपने रंग में हक़ अदा करने वाले बनने के लिए प्रयासरत थे। प्रत्येक का अपना ढंग था तथा उनको देखने वालों और उनके साथ घनिष्ट सम्बंध रखने वालों ने भी उन सहाबा की प्रत्येक शैली और नैतिकता व भूमिका के द्वारा अपने अपने रंग में नसीहत प्राप्त की अथवा कुछ बातों से परिणाम निकाले। हज़रत मुस्लेह मौऊद तो स्वंय भी सहाबा में से थे और लगभग सभी सहाबा से अथवा जिनकी घटनाएँ आप बयान फ़रमाते हैं उनके साथ आपका व्यक्तिगत सम्बंध भी था। आप जब सहाबा के संदर्भ में बात करके उनसे परिणाम निकालकर बात करते हैं तो उन उपदेशों का दिल पर एक विशेष प्रभाव भी होता है। कई बार हम किसी घटना से एक शिक्षा लेते हैं परन्तु जब विचार करें तो विभिन्न बातें सामने आती हैं और एक ही घटना विभिन्न रंग में नसीहत बन जाती है। उदाहरणतः मौलवी बुर्हानुद्दीन साहब जहलमी की घटना है। इसको हज़रत मुस्लेह मौऊद ने अपने रंग में बयान फ़रमाया है। मौलवी बुर्हानुद्दीन साहब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जो पहली भेंट की है वह भी हज़रत मुस्लेह मौऊद बयान फ़रमाते हैं, एक चुटकुला ही है। कहते हैं कि मैं क़ादियान में आया परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम गुरदासपुर में थे, इस लिए वहाँ गया। जिस मकान में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ठहरे हुए थे उसके एक ओर बाग़ था। हामिद अली मरहूम दरवाज़े पर बैठा था उसने मुझे अंदर जाने की अनुमति न दी परन्तु मैं छिपकर दरवाज़े तक पहुंच गया। धीरे से दावाज़ा खोलकर जो देखा तो हज़रत साहब टहल रहे थे और जल्दी जल्दी लम्बे लम्बे क़दम उठाते थे। हज़रत मौलवी साहब कहते हैं कि मैं तुरन्त पीछे की ओर मुड़ा और मैंने समझ लिया कि यह व्यक्ति सच्चा है जो जल्दी जल्दी टहल रहा है अवश्य ही इसने किसी दूर की मंज़िल पर पहुंचना है तज़ी तो यह जल्दी जल्दी चल रहा है। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि वहाबी होकर मौलवी साहब का इस प्रकार की कल्पना करना आश्चर्य जनक बात है अन्यथा ये लोग बड़े शुष्क प्रकृति के होते हैं, कट्टर पंथी ही होते हैं। अब देखें कि अल्लाह तआला ने हज़रत मौलवी साहब को सत्य की पहचान करानी थी तो न ही उनको किसी क़ुरआन के तर्क को समझने का विचार आया, न किसी हदीस के तर्क को समझने का विचार आया, न ही किसी अन्य तर्क का।

अतः हज़रत मौलवी बुर्हानुद्दीन साहब की नेक प्रकृति ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के तेज़ चलने को ही सत्य का निशान समझ लिया। अल्लाह तआला की विशेष प्यार की दृष्टि थी जो हज़रत मौलवी साहब पर पड़ी अन्यथा ऐसे लोग ज़ी होते हैं जो तर्क सुनकर, निशान देखकर, फिर भी नहीं मानते। यह भी उचित नहीं कि हम यह कह दें कि सभी वहाबी कठोर प्रकृति के होते हैं। हज़ारों ऐसे हैं अफ़्रीक़ा में जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सत्यता पर सहमत

हुए तथा आपकी बैअत में आए। वह्यी और इलहाम की हर समय आवश्यकता उन लोगों को अनुभव भी हुई और यह पता चला कि औलिया और नबी बारिश की भांति हैं जिनके आने से धरती हरी भरी होती है। अतः रूहानी रूप से हरा भरा होने के लिए इलहाम का जारी रहना ज़ी आवश्यक है।

एक घटना हज़रत सेठ अब्दुर्रहमान मद्रासी की है। उनमें बड़ी निष्ठा थी तथा बहुत तबलीग़ करने वाले थे। आरज़्भ में उनकी आर्थिक दशा बड़ी अच्छी थी और उस समय वे दीन के लिए बड़ी क़ुर्बानी किया करते थे। तीन चार सौ रुपए मासिक तक चन्दा भेजते थे। ख़ुदा की इच्छा कि कुछ अनुचित निर्णय लेने के कारण उनका व्यवसाय बिल्कुल नष्ट हो गया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह इलहाम उन्हीं के सज़्बंध में हुआ था कि-

क़ादिर है वह बारगाह जो टूटा काम बना दे
बना बनाया तोड़ दे कोई उसका भेद न पावे

जब यह इलहाम हुआ तो पहली पंक्ति की ओर ही ध्यान गया और यह समझा गया कि सेठ साहब का व्यवसाय ठीक हो जाएगा तथा दूसरी पंक्ति की ओर ध्यान न गया किसी का, कि पहले काम बनेगा फिर बिगड़ भी जायगा। जब यह इलहाम हुआ तो इसके पश्चात कारोबार फिर चमक उठा, हालत अच्छी हो गई परन्तु फिर दशा बिगड़ गई और यहाँ तक परिस्थिति हो गई कि कई बार खाने पीने के लिए भी उनके पास कुछ न होता था। एक दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अद्भुत प्रेम के रंग में उनका वर्णन किया। सेठ अब्दुर्रहमान हाजी अल्लाह रक्खा साहब की निष्ठा कितनी बढ़ी हुई थी। पाँच सौ रुपए की भेंट थी जो उन्होंने उस समय भेजी थी। किसी दोस्त ने उनकी कठिनाइयों को देखकर दो तीन हज़ार रुपए उनको दिए कि कोई व्यापार आरज़्भ कर दें अथवा बर्तनों की दुकान खोलें। उसमें से पाँच सौ रुपए उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भिजवा दिया और लिखा कि लज़्बे समय से मैं चन्दा नहीं भेज सका, अब मेरे स्वाभिमान से न रहा गया कि जब अल्लाह तआला ने मुझे एक रक़म भिजवाई है तो मैं उसमें से दीन के लिए कुछ न दूँ। अर्थात दीन की सेवा के लिए उनकी निष्ठा अत्यधिक थी।

एक स्थान पर हज़रत मुस्लेह मौऊद, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने का चित्रण करते हुए कि किस प्रकार आपके दावे के बाद कि आप मसीह मौऊद हैं तथा इसके अनुसार नबी और रसूल भी हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आपको यह स्तर मिला है न कि किसी व्यक्तिगत योग्यता के कारण, फिर भी मुसलमानों की अधिकांश संज़्या आपके विरुद्ध हो गई। फिर समस्त धर्मों को जो आपने चैलेंज किया उसके कारण ईसाई ज़ी तथा हिन्दू भी आपके विरोधी हो गए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपमानित करने का बड़ा प्रयत्न किया गया। आपके ऊपर मुक़दमे किए गए यहाँ तक कि निरन्तर तीन महीने तक सामान्य सरकारी छुट्टियों के अतिरिक्त बराबर प्रतिदिन कई कई घन्टे आपको अदालत में खड़े रहना पड़ता। एक दिन मजिस्ट्रेट ने अपनी दुश्मनी के कारण पानी तक पीने की अनुमति नहीं दी आपको। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि हम आज इन बातों को भूल गए हैं परन्तु उस ज़माने में श्रद्धालुओं के लिए यह एक बहुत बड़ी कसौटी थी। वे एक ओर तो ख़ुदा तआला के ये वादे सुनते थे कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंडेंगे और तेरे न मानने वाले दुनिया में तुच्छ क़ौम की भांति हो जाएँगे। परन्तु दूसरी ओर देखते थे कि एक मूल्य हीन व्यक्ति जो चार पाँच सौ रुपए वेतन लेता है, हिन्दू मजिस्ट्रेट आपको खड़ा रखता है और पानी तक पीने की अनुमति नहीं देता। यहाँ तक कि खड़े खड़े आपका सिर चकराने लगता और पाँव थक जाते। कमज़ोर ईमान वाले चकित रह जाते होंगे कि क्या यही वह व्यक्ति है जिसके विषय में अल्लाह तआला के इतने वादे हैं। इस प्रकार ये भी परीक्षाएँ थीं। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि मुझे वह दृश्य याद है जिस दिन एक केस का निर्णय सुनाया जाना था। हमारी जमाअत में एक दोस्त थे जिनको प्रोफ़ैसर कहा जाता था। जब निर्णय सुनाने का समय आया तो लोगों को विश्वास था कि मजिस्ट्रेट अवश्य ही दंड दे देगा और सज़्भव है कि कारागार का ही दंड दे। उधर श्रद्धालु जो थे अहमदी, उनके मन में एक क्षण के लिए भी यह विचार नहीं आ सकता था कि आपको बन्दी बना लिया जाएगा। उस दिन अदालत की ओर से भी विशेष प्रबन्ध किया गया था, पहरा भी अधिक था अर्थात पुलिस बहुत अधिक थी। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अदालत के भीतर पधारे तो दोस्तों ने प्रोफ़ैसर साहब को बाहर रोक लिया क्यूंकि उनकी प्रकृति में क्रोध था। प्रोफ़ैसर साहब ने एक बड़ा सा पत्थर एक

वृक्ष के नीचे छिपाकर रखा हुआ था। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि जिस प्रकार एक दीवाना चींख़ मारता है, बड़े ज़ोर से रोते हुए सहसा वे वृक्ष की ओर भागे और वहाँ से पत्थर उठाकर सरपट अदालत की ओर दौड़े और यदि जमाअत के लोग रास्ते में न रोकते तो वे मजिस्ट्रेट का सिर फोड़ देते। उन्होंने कल्पना कर ली थी कि मजिस्ट्रेट अवश्य ही दंड देगा और इसी धारणा के अंतर्गत वे उसे मारने के लिए तत्पर हो गए।

अतः इन परिस्थितियों में कुछ लोगों की इस प्रकार की प्रतिक्रियाएँ होती हैं। कमज़ोर ईमान वाले मुरतद (विमुख) हो जाते हैं तथा निष्ठावानों के ईमान में वृद्धि होती है परन्तु अत्यधिक भावुक रंग रखने वाले, जैसे कि प्रोफ़ैसर साहब थे भावुक भी और क्रोधी भी तथा इस प्रकार की धारणा रखने वाले, वे स्वंय बदला लेने की भी सोच लेते हैं परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जो शिक्षा दीक्षा है जो हमारे लिए मार्ग-दर्शन है तथा एक सुन्दर शैली है उसे सदैव याद रखना चाहिए कि संतोष एंव साहस पूर्वक हमने सदा काम लेना है। परिणाम तो इन्शाअल्लाह तआला वही होना है जिसकी सूचना अल्लाह तआला ने दी है और संतोष एंव दुआ से काम लेने वाले इन्शाअल्लाह इसके दृश्य देखेंगे भी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाह अन्हु ने एक व्यक्ति का वर्णन फ़रमाया जिनका सहरी के समय के विषय में अपना एक दृष्टि कोण था परन्तु फिर अल्लाह तआला ने भी उनका किस प्रकार मार्ग दर्शन किया वह भी अद्भुत है। फ़रमाते हैं कि हमारी जमाअत में एक व्यक्ति हुआ करता था जिसे लोग फ़लास्फ़र (दर्शन शास्त्री) कहते थे अब उसका देहांत हो गया है अल्लाह तआला उसको क्षमा करे। फ़रमाते हैं कि उसे बात बात में चुटकले सूझते थे जिनमें से कुछ बड़े अच्छे हुआ करते थे। फ़लास्फ़र उसे इस लिए कहते थे कि हर एक बात में एक नया बिन्दु निकाल लेता था। एक बार रोज़ों पर चर्चा चल पड़ी, कहने लगा कि यह उन्होंने केवल एक ढोंग रचाया हुआ है अर्थात मौलवियों ने अथवा फ़िक़्ह (इसलामी आचार संहिता) के विद्वानों ने कि सहरी थोड़ी देर से खाओ तो रोज़ा नहीं होता। भला जिसने बारह घन्टे भूखा रहना है उसने पाँच मिन्ट बाद सहरी खा ली तो क्या बुराई है। मौलवी तुरन्त फ़त्वा दे देते हैं कि इसका रोज़ा नष्ट हो गया। इस प्रकार उसने इस पर बड़ी चर्चा की। सुबह वह घबराया हुआ ख़लीफ़ः अव्वल के पास आया, ज़माना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के युग की बात है परन्तु क्यूँकि हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल ही दर्स (पाठ) आदि दिया करते थे इस लिए आपकी मज्लिस में भी लोग अधिकता से आ जाया करते थे। आते ही कहने लगा कि आज रात तो मुझे बड़ी डाँट पड़ी। आपने फ़रमाया- क्या हुआ? कहने लगा रात को मैं वाद विवाद करता रहा कि मौलवियों ने ढोंग रचाया हुआ है कि रोज़ेदार यदि सहरी देर से खाए तो उसका रोज़ा नहीं होता। मैं कहता था कि जिस व्यक्ति ने बारह घन्टे या चौदह घन्टे भूखा रहना है यदि पाँच मिन्ट देर से सहरी खाता है तो इसमें क्या बुरा है? इस वाद विवाद के पश्चात मैं सो गया तो सपने में देखा कि तानी लगाई हुई है और तानी को पहले एक केले से बांधा और फिर मैं उसे दूसरे केले से बांधने के लिए ले चला। जब केले के निकट पहुंचा तो दो उंगली पहले ही तानी समाप्त हो गई। मैं बार बार खींचता कि किसी प्रकार केले से बांध लूँ परन्तु सफल न हो सका और मैंने समझा कि मेरा पूरा सूत मिट्टी में गिर कर नष्ट हो गया। अतः मैंने शोर मचाना शुरु कर दिया कि मेरी सहायता के लिए आओ, दो उंगलियों के कारण मेरी तानी चली। वह धागा जो था व्यर्थ हो रहा है और यही शोर मचाते मचाते मेरी आँख खुल गई। जब मैं जागा तो मैं समझा कि इस सपने के द्वारा अल्लाह तआला ने मुझे समस्या का समाधान समझाया कि दो उंगलियों जितना अन्तर रह जाने से यदि तानी नष्ट हो जाती है तो रोज़े में पाँच मिन्ट की देर होने के कारण किस प्रकार रोज़ा पूरा हो सकता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अधिकांशतः किसी सूफ़ी का कथन पंजाबी में बयान फ़रमाया करते थे कि या तो किसी के पल्लू में चिमट जा या कोई पल्लू तुझे ढाँप ले अर्थात यह सांसारिक जीवन इस प्रकार है कि इसमें इसके अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं कि या तो तुम किसी के बन जाओ या कोई तुम्हारा बन जाए। अल्लाह तआला इसी विषय की ओर संकेत देते हुए फ़रमाता है कि خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ अर्थात मनुष्य की प्रकृति में हमने यह क्षमता रखी है कि वह किसी न किसी का होकर रहना चाहता है इसके बिना उसके मन को शांति नहीं मिलती तथा और किसी का होने का सबसे उत्तम उपाय यह है जिसके द्वारा दीन और दुनिया दोनों मिलते हैं कि इंसान अल्लाह तआला का हो जाए तथा इसके लिए प्रयास करे। फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद इश्क़ के स्तर तथा अल्लाह तआला के साथ सम्बंध पर चर्चा करते हुए एक उदाहरण देते

हुए फ़रमाते हैं कि यद्यपि उदाहरण तो एक पागल का है फिर ऐसे पागल का जिसका अब देहांत हो चुका है और यद्यापि यह एक ऐसे पागल का उदाहरण है जो मेरा अध्यापक भी था परन्तु इसके द्वारा प्रेम के अनुभव की स्थिति अत्यधिक स्पष्ट हो जाती है। एक मेरे अध्यापक थे जो स्कूल में पढ़ाया करते थे बाद में वे नबुव्वत का दावा करने वाले भी बन गए। उनका नाम मौलवी यार मुहम्मद साहब था उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से इतना प्रेम था कि उसके परिणाम स्वरूप ही उन पर जनून का रंग चढ़ गया। सम्भव है कि पहले भी उनकी बुद्धि में कोई विकार हो परन्तु हमने तो यही देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से प्रेम बढ़ते बढ़ते उन्हें जुनून हो गया और वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की हर एक भविष्य वाणी को अपने से सम्बंधित करने लगे। फिर उनका यह जुनून यहाँ तक बढ़ गया कि वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निकट रहने की इच्छा में कई बार इस प्रकार का प्रदर्शन भी कर बैठते जो अनुचित होतीं। उदाहरणतः वे नमाज़ में ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शरीर पर अपना हाथ फेरने का प्रयास करते। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनकी इस स्थिति को देखकर कुछ आदमी नियुक्त किए हुए थे ताकि जिन दिनों में उन्हें यह दौरा पड़े तो वे ध्यान रखें कि कहीं वे आपके पीछे आकर न बैठ जाएँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आदत थी कि जब आप वार्ता करते अथवा कोई लैक्चर देते तो अपने हाथ को रानों की ओर इस प्रकार लाते जिस प्रकार कोई धीरे से हाथ मारता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जब इस इस प्रकार हाथ हिलाते तो मौलवी यार मुहम्मद साहब प्रेम के जोश में तुरन्त कूदकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निकट पहुंच जाते और जब कोई पूछता कि मौलवी साहब यह क्या किया आपने? तो वे कहते कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुझे संकेत देकर बुलाया था। तो हज़रत मुस्लेह मौऊद ने यह उदाहरण देकर फ़रमाया कि यह दीवानगी और इश्क़ की स्थिति है कि जब नहीं भी ध्यान दिया जा रहा तब भी प्रेमी की इच्छा के बिना हिलने वाले हाथ को अपने बुलाने का संकेत समझते हैं। परन्तु हम ख़ुदा तआला से मुहब्बत का दावा तो करते हैं लेकिन उसकी ओर से स्पष्ट घोषणा के बावजूद कि नमाज़ की ओर आओ तथा सफलता की ओर आओ। न नमाज़ों की ओर दौड़कर जाते हैं न जुम्अः की नमाज़ के लिए व्यवस्था पूर्वक जाते हैं।

अतः प्रत्येक अहमदी को ध्यान देना चाहिए और अल्लाह तआला के स्पष्ट बुलावे पर, उपस्थित हूँ कहते हुए उस दीवाने या आशिक़ की भांति फलांग कर आगे आना चाहिए तथा मस्जिदों को आबाद रखने का प्रयास करते रहना चाहिए। अभी तो छुट्टियाँ हैं बच्चे भी ले आते हैं अपने माँ बाप को परन्तु इसके पश्चात धीरे धीरे हाज़िरी कम होने लगती है इस लिए याद भी दिला रहा हूँ। अल्लाह तआला हमें हमारी नमाज़ों की सुरक्षा और अदायगी का हक़ अदा करने की भी तौफ़ीक़ प्रदान करता रहे।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 07.08.2015

सैय्यदना हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से मजलिस अन्सारुल्लाह भारत दिनांक 25 जौलाई से 15 अक्तूबर 2015 तक अपनी डायमंड जुबली मना रही है।

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*